



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

हलके युद्धक वायुयान तेजस एल एस पी-7 की पहली उड़ान



हलका युद्धक वायुयान तेजस एल एस पी-7 उड़ान भरते हुए।

इस अंक में

- ब्रह्मोस का सफल परीक्षण
- 36वां डी आर डी ओ निदेशक सम्मेलन
- डी आर डी ओ पुरस्कारों का वितरण
- स्वचालित मानवरहित वायुयान विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
- पुरस्कार
- कार्मिक समाचार
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- खेलकूद समाचार
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

तेजस सीमित श्रृंखला उत्पादन-7 (एल एस पी-7) वायुयान ने 09 मार्च 2012 को अपराह्न 04:27 बजे एच ए एल हवाई अड्डे से अपनी पहली उड़ान भरी। इस परीक्षण उड़ान का इस कार्यक्रम के लिए काफी महत्त्व

है क्योंकि एल एस पी-7 का निर्माण मानक आरंभिक प्रचालनात्मक क्लियरेंस आई ओ सी (मानक) के सन्निकट है। तदनुसार, एल एस पी-7 वायुयान को एल एस पी-8 के साथ प्रयोक्ता मूल्यांकन परीक्षण (यू ई टी) के लिए भारतीय वायु सेना को सौंपा जाएगा। यह उड़ान इस तथ्य पर विचार करते हुए भी उल्लेखनीय थी कि इस कार्यक्रम में एल एस पी वायुयान की पहली उड़ान के लिए उत्पादन परीक्षण अनुसूची का पहली बार प्रयोग किया गया। यह भी पहली बार हुआ कि वायुयान की पहली उड़ान के साथ परंपरागत रूप से अनुधावक वायुयान उड़ान नहीं भर रहा था, जो इस एल सी ए में प्रयुक्त यंत्रों के कार्य-निष्पादन में विश्वास के स्तर का परिचायक है।

यह उड़ान 28 मिनट की थी, जिसके दौरान कॉकपिट में ग्रुप कैप्टन के के वेणुगोपाल नियंत्रण पर थे तथा उनके साथ राष्ट्रीय उड़ान परीक्षण केंद्र (एन एफ टी सी) में निरीक्षण निदेशक, विंग कमांडर कबदवाल दूरमिती के रूप में कार्य कर रहे थे। परीक्षण उड़ान के दौरान मल्टी मोड रडार (एम एम आर), हेल्मेट माउंटेड डिस्प्ले सिस्टम (एच एम डी सी), ऑटो पायलट तथा इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम (आई एल एस) सहित वायुयान

प्रणालियों का कार्य-निष्पादन संतोषजनक था, जिसके कारण वैमानिकी विकास एजेंसी (ए डी ए), हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एच ए एल), भारतीय वायु सेना (आई ए एफ), सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), डी जी ए क्यू ए, वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई) तथा नैशनल एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एन ए एल) सहित सभी हितधारियों को गर्व का अनुभव हुआ।

ब्रहमोस का सफल परीक्षण



फाइल फोटो: ब्रहमोस

एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), बालासोर में दिनांक 28 मार्च 2012 को 1130 बजे ब्रहमोस प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण किया गया। यह प्रक्षेपास्त्र उन्नत मार्गनिर्देशन एल्गोरिथम से

किया गया। इस परीक्षण के दौरान सेना के अधिकारी; परियोजना निदेशक श्री एस सोम; तथा कार्यकारी निदेशक रियर एडमिरल एस मोहपात्र उपस्थित थे।

सुसज्जित था। प्रक्षेपास्त्र ने 190 किमी की दूरी 2.8 मैक की गति से अत्यंत परिशुद्धता से पूर्ण की। टेलीमेट्री स्टेशनों के नेटवर्क तथा पथ के बीच में स्थित जहाजों से ज्ञात हुआ कि प्रक्षेपास्त्र ने अपने पूर्व निर्धारित पथ का अनुसरण किया। ब्रहमोस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा महाप्रबंधक, एवं विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (नौसेना प्रणाली एवं आयुधा समाघात अभियांत्रिकी) डॉ ए शिवथानु पिल्लई, ने बताया कि प्रक्षेपण पूर्ण रूप से सफल रहा। इस प्रक्षेपास्त्र का समेकन ब्रहमोस समेकन परिसर, हैदराबाद में पूर्ण रूप से

36वां डी आर डी ओ निदेशक सम्मेलन



36वें निदेशक सम्मेलन के दौरान मंचासीन गणमान्य विभूतिगण।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन (डी आर डी ओ) का वार्षिक निदेशक सम्मेलन डी आर डी ओ के लिए एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसमें सेना के शीर्षस्थ अधिकारी, शिक्षा जगत तथा उद्योग जगत के विशेषज्ञ भाग लेते हैं तथा गत वर्ष में प्राप्त की गई उपलब्धियों का जायजा लेते हैं एवं आगामी वर्ष के लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार करते हैं तथा साथ ही भावी प्रयासों के दृष्टिगत उभरती हुई नूतन प्रौद्योगिकियों के संबंध में भी विचार-विमर्श करते हैं। प्रत्येक वर्ष इस सम्मेलन में विचार हेतु एक मुख्य प्रतिपाद्य विषय का चयन किया जाता है और साथ ही तकनीकी तथा तकनीकी-प्रबंधकीय विषयों पर भी विचार-विमर्श किया जाता है। इस वर्ष का मुख्य प्रतिपाद्य विषय **वैश्वीकरण के युग में आत्मनिर्भर रणनीति** था, जो वर्तमान संदर्भ में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है।

डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली में 19 मार्च 2012 को हुए इस सम्मेलन का उद्घाटन माननीय रक्षा मंत्री श्री ए के एंटनी द्वारा किया गया, जिसके दौरान आपने रक्षा प्रौद्योगिकियों तथा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की तात्कालिक आवश्यकता पर बल दिया। आपने रक्षा प्रौद्योगिकियों के अनेक क्षेत्रों में डी आर डी ओ द्वारा हाल में प्राप्त की गई उपलब्धियों पर अपना गहरा संतोष व्यक्त किया। आपने कहा कि छह वर्ष पहले आपके द्वारा रक्षा मंत्रालय का प्रभार ग्रहण करने के बाद से डी आर



36वें निदेशक सम्मेलन के दौरान संबोधित करते हुए माननीय रक्षा मंत्री, श्री ए के एंटनी।

डी ओ के कार्य-निष्पादन और यहां तक कि इसके सामान्य दृष्टिकोण में भी प्रभावी बदलाव आया है। आपने तीनों हितधारियों अर्थात् डी आर डी ओ, उत्पादन एजेंसियों तथा सशस्त्र सेनाओं के बीच घनिष्ठ समेकित दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। डी आर डी ओ तथा सशस्त्र सेनाओं के बीच घनिष्ठ अंतःसंबंध विकसित करने की आवश्यकता पर भी आपके उद्घाटन भाषण के दौरान विशेष रूप से उल्लेख किया गया। आपने डी आर डी ओ द्वारा विचार-विमर्श हेतु मुख्य प्रतिपाद्य विषय के चयन की भी सराहना करते हुए कहा कि इससे निश्चित रूप से हमारे सशस्त्र बलों में अत्याधुनिक आयुध प्रणालियों के

घनिष्ठ सहयोग से वैश्वीकरण के इस युग में आत्मनिर्भरता विकसित करने के लिए निश्चित रूप से एक नई कार्यनीति विकसित होगी। डी आर डी ओ के लिए यह आवश्यक है कि विकास के घटते हुए चक्र में अत्याधुनिक प्रणालियों को प्रस्तुत करें।

इस अवसर पर बोलते हुए रक्षा मामलों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री सतपाल महाराज ने इस बात का उल्लेख किया कि रक्षा बजट में अनुसंधान तथा विकास का हिस्सा 1960 के दशक के 1 प्रतिशत से बढ़कर 6 प्रतिशत हो गया है। "स्थायी समिति ने इसे 10 प्रतिशत करने की सिफारिश की थी जबकि हमारे पड़ोस के कुछ देशों द्वारा इस मद पर 15 प्रतिशत से भी अधिक का व्यय किया जा रहा है।" राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिव शंकर मेनन ने सेमिनार हेतु प्रतिपाद्य विषय का चयन करने के लिए डी आर डी ओ को बधाई देते हुए कहा कि देश को सामरिक प्रक्षेपास्त्र जैसी स्वदेश-निर्मित सामरिक प्रणालियां उपलब्ध कराने के लिए हमारा राष्ट्र डी आर डी ओ का कृतज्ञ है।



36वें निदेशक सम्मेलन को संबोधित करते हुए रक्षा मामलों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री सतपाल महाराज।

इससे पूर्व एकत्रित विशिष्टजनों को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के महानिदेशक डॉ वी के सारस्वत ने उपयुक्त सशक्तीकरण के दृष्टिगत अंतरिक्ष तथा परमाणु ऊर्जा आयोग के अनुसार ही रक्षा प्रौद्योगिकी आयोग स्थापित करने की बात कही ताकि आत्मनिर्भरता लाई जा सके। आपने डी आर डी ओ द्वारा विकसित उत्पादों के लिए उत्पादन भागीदार चयन करने में डी आर डी ओ द्वारा एक



36वें निदेशक सम्मेलन के दौरान भाषण देते हुए रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत।

महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। डी आर डी ओ द्वारा हाल में प्राप्त की गई उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा, "डी आर डी ओ विगत वर्षों के दौरान निरंतर विकास करते हुए एक सुदृढ़ अनुसंधान तथा विकास संगठन के रूप में उभरा है तथा इसने सशस्त्र सेनाओं के लिए व्यापक किस्म की आयुध प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को विकसित किया है तथा उपयोग हेतु प्रस्तुत किया है। गत एक दशक के दौरान डी आर डी ओ द्वारा विकसित की गई प्रौद्योगिकियों पर आधारित प्रणालियों का उत्पादन मूल्य 1,48,000 करोड़ रुपए से भी अधिक है।" आपके द्वारा विशेष तौर पर उल्लेख की गई डी आर डी ओ की हाल की कुछ उपलब्धियों में प्रहार, अग्नि-4, अंतःवायुमंडलीय ए ए डी इंटरसेप्टर का सफल परीक्षण, हमारे सामरिक बल कमान द्वारा अग्नि-1 और अग्नि-2 के परीक्षण, एल सी ए हेतु आरंभिक प्रचालनात्मक क्लियरेंस-1, रुस्तम-1, मानवरहित वायुयान (यू ए वी) का प्रदर्शन, भारतीय सेना की प्रचालनात्मक कमान में 110 एम बी टी और 40 पिनाका लांचरों को शामिल करना, अंतःजलीय यान प्रौद्योगिकी प्रदर्शक का परीक्षण, एक उन्नत सक्रिय एवं निष्क्रिय समेकित सोनार प्रणाली युशुष, हुल-आरोपित सोनार, हमसा, एक सक्रिय तथा निष्क्रिय टोहयुक्त 'व्यूह सोनार नागन' तथा एक सक्रिय टोहयुक्त 'व्यूह संसूचन' एवं टोही प्रणाली का उनके अपने-अपने मंचों पर एकीकरण; डब्ल्यू एल आर, एल-स्टार, अश्लेष जैसे रडारों तथा प्रारंभिक ए ई डब्ल्यू सी रडार का सफल परीक्षण; साइबर रक्षा तथा फोरेंसिक प्रयोगशाला की स्थापना थी। एन बी सी रक्षा प्रौद्योगिकियों तथा जीवन सहायक प्रणालियों का

संस्थापन हमारी सशस्त्र सेनाओं द्वारा काफी अधिक सराहा गया है।

इस वर्ष के सम्मेलन की मुख्य बात माननीय रक्षा राज्य मंत्री डॉ एम एम पल्लमराजू की अध्यक्षता में **त्वरित प्रयोग की कार्यनीतियां—अनुसंधान तथा विकास, उत्पादन एवं अधिष्ठापन** विषय पर तीनों सशस्त्र सेनाओं, निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग एवं डी आर डी ओ के शीर्ष प्रबंधन से आए प्रतिनिधियों के साथ गोलमेज विचार-विमर्श को आयोजित करना था। विचार-विमर्श का सार प्रस्तुत करते हुए माननीय रक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि प्रणाली की कमियों, जो आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दिशा में किए गए सुविचारित प्रयासों को बाधित करती हैं, की पहचान करने के लिए तथा ऐसे अवरोधों को दूर करने की दृष्टि से नए समाधानों को संयुक्त रूप से विकसित करने के लिए सभी हितधारियों को एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। अपेक्षित परिणामों को प्राप्त करने के लिए सुझाए गए कुछ अन्य उपायों में उत्पादन क्षमताओं में पर्याप्त वृद्धि करना, गुणवत्ता आश्वासन के वर्धित स्तरों, उत्पादन प्रबंध हेतु आधुनिक उपकरणों का प्रयोग तथा उत्पाद विकास के आरंभिक चरणों से ही उत्पादन भागीदारों के साथ ही प्रयोक्ताओं की भागीदारी को भी प्रयोग में लाना आवश्यक है। यह महसूस किया गया कि निजी क्षेत्र की भागीदारी से आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में उल्लेखनीय सहायता प्राप्त होगी।

यह सम्मेलन, जिसमें प्रतिपाद्य विषय से संबंधित सात तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, डॉ सारस्वत के द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्ति को "नियंत्रण, इनकार तथा ब्लैकमेलिंग से मुक्ति; तथा अपनी उचित सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें जिन चीजों की आवश्यकता है, उसे प्राप्त करने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया गया। आपने इस बात पर बल दिया कि हमारे सशस्त्र बल, जो एक त्वरित अधिग्रहण के मोड में हैं, में अभिवृत्ति-जन्य परिवर्तन लाना आवश्यक है। "उभरते हुए सुरक्षा परिदृश्य और प्रौद्योगिकी विकल्पों का मूल्यांकन" विषय पर आयोजित किए गए पहले सत्र में इस बात पर बल दिया गया था कि उभरते हुए भय का वतावरण, भारत के विरुद्ध हाल में प्रदर्शित हुआ आक्रामक रवैया, ऊर्जा संबंधी समस्याओं, खाद्य तथा जल सुरक्षा, तथा भारत की अद्वितीय भू-राजनीतिक स्थिति के कारण रक्षा



गोलमेज विचार-विमर्श के दौरान माननीय रक्षा राज्य मंत्री डॉ एम एम पल्लमराजू तथा रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत।

प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है।

साइबर तथा सूचना सुरक्षा विषय पर आयोजित सत्र के दौरान साइबर युद्ध के खतरों का मूल्यांकन किया गया, जो एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें डी आर डी ओ ने अत्यधिक उल्लेखनीय प्रगति की है। "प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तन-अंतराल को पाटना" विषय पर आयोजित सत्र के दौरान आई आई टी, मुंबई के पूर्व निदेशक प्रोफेसर एम एस अनंत, जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय परिदृश्य में नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा जगत, अनुसंधान वैज्ञानिकों तथा उद्योगों को एकजुट करने के लिए भारत के पहले एकमात्र मंच की स्थापना करने में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, ने प्रौद्योगिकी पार्कों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। आपने चेन्नई स्थित आई आई टी, मुंबई अनुसंधान पार्क को डी आर डी ओ द्वारा प्रदान किए गए समर्थन की सराहना की, जहां इस सुविधा का एक बड़ा भाग डी आर डी ओ द्वारा लिया गया है, जहां वैज्ञानिकों ने भावी प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए अनेक अनुसंधान कार्यों को करने की योजना बनाई है।

यह सम्मेलन एक ऐसा मंच सिद्ध हुआ, जहां सशस्त्र बलों के शीर्षस्थ अधिकारियों, उद्योग, शिक्षा जगत तथा डी आर डी ओ ने एक सुदृढ़ और आत्मनिर्भर भारत निर्माण के लिए संबंधित मुद्दों पर काफी गंभीरता से विचार-विमर्श किया तथा भावी कार्ययोजना बनाई। इस प्रकार इस सम्मेलन में व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में राष्ट्र के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अनेक उपयोगी मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

डी आर डी ओ पुरस्कारों का वितरण

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक डॉ विजय कुमार सारस्वत ने डी आर डी ओ के शीर्ष वैज्ञानिकों, डी आर डी ओ पुरस्कार विजेताओं तथा "महिला कल्याण मंच" के सदस्यों की एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अनुसंधान तथा विकास संबंधी

प्रयासों को कम खर्चीला, गुणवत्ता परिणाम के रूप में बदलने, जो प्रयोक्ताओं द्वारा स्वीकार्य हो, के लिए सृजनात्मकता तथा उत्पादकता के साथ ही नवप्रवर्तन की आवश्यकता है। आप 20 मार्च 2012 को मेटकॉफ हाउस, दिल्ली स्थित भगवंतम सभागार में आयोजित किए गए डी आर डी ओ पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। ये पुरस्कार प्रति वर्ष डी आर डी ओ निदेशक सम्मेलन के अवसर पर दिए जाते हैं। डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों को उनके विशेषज्ञताप्राप्त क्षेत्रों में समर्पित तथा उल्लेखनीय कार्य के लिए "युवा वैज्ञानिक पुरस्कार" प्रदान किए जाते हैं। इसी प्रकार, डी आर डी ओ कार्मिकों तथा प्रशासन, भंडार एवं संबद्ध संवर्गों के कार्मिकों को संबंधित तकनीकी, प्रशासनिक/भंडार तथा अन्य संबंधित कार्य में असाधारण प्रयास और योगदान के लिए "सर्वोत्तम निष्पादन पुरस्कार" प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार विजेता, जो प्रत्येक श्रेणी में 16 की संख्या में चुने गए थे, का चयन प्रोफेसर पी एस गोयल, पूर्व अध्यक्ष, भर्ती तथा मूल्यांकन केंद्र, डी आर डी ओ की अध्यक्षता में गठित विशेषज्ञों के एक प्रतिष्ठित पैनल द्वारा किया गया। पुरस्कार समारोह के दौरान पारस्परिक चर्चा हेतु एक सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें कुछ पुरस्कार विजेताओं ने अपने विचार प्रकट किए।

डॉ सारस्वत ने युवा पुरस्कार विजेताओं को उनकी सक्षमता, उत्कृष्टता, तथा संगठन को उनके द्वारा दी गई अद्वितीय सेवा के लिए बधाई देते हुए उन्हें अपने प्रयासों को बनाए रखने के लिए कहा, क्योंकि केवल



डी आर डी ओ पुरस्कार वितरण समारोह में मंचासीन (बायें से) डॉ अरुण कुमार, निदेशक कार्मिक; रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, डॉ वी के सारस्वत; तथा डॉ वी भुजंगराव, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (मानव संसाधन)।

कौशल, सक्षमता तथा प्रयास ही दीर्घकालिक लाभ उपलब्ध करा सकते हैं। आपने इस वर्ष का सम्मेलन, जिसका प्रतिपाद्य विषय वैश्वीकृत युग में आत्मनिर्भरता संबंधी कार्यनीति था, के दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों एवं गोलमेज सत्र के दौरान किए गए विचार-विमर्श के संबंध में एक रूपरेखा प्रस्तुत की। कॉरपोरेट जगत में हासिल की गई कुछ सफलताओं का उदाहरण देते हुए आपने कहा कि एक प्रमुख हितकार के रूप में डी आर डी ओ का प्रयोक्ताओं के लिए स्वीकार्य स्वदेश-निर्मित प्रणालियों को विकसित करके देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा उत्तरदायित्व है। आपने कहा कि नवप्रवर्तन एक सतत प्रक्रिया है तथा वैज्ञानिकों से अपने स्वयं के तरीके के द्वारा नवप्रवर्तन करने का अनुरोध किया। इससे पूर्व, डॉ वी भुजंगराव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एच आर) ने स्वागत भाषण दिया। डॉ अरुण कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं कार्मिक निदेशक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

डी आर डी ओ निदेशक सम्मेलन वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता है, जिसके दौरान रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के नेतृत्व में डी आर डी ओ के शीर्ष वैज्ञानिक विभिन्न रक्षा प्रौद्योगिकियों पर विचार-विमर्श करते हैं। इस वर्ष तीन-दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली में 19 मार्च 2012 को माननीय रक्षा मंत्री श्री ए के एंटनी द्वारा किया गया।

स्वचालित मानवरहित वायुयान विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

वैमानिकी विकास स्थापना (ए डी ई), बेंगलूरु, जो एक आई एस ओ 9001 : 2008 प्रमाणित बहु-क्षेत्रीय संगठन है, ने 24-25 फरवरी 2012 के दौरान ईगलटन गोल्फ रिसोर्ट, बेंगलूरु में स्वचालित मानवरहित वायुयान विषयक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आई सी ए यू वी) का आयोजन किया। आई सी ए यू वी 2012 का आयोजन अत्यधिक सफल रहा तथा यह भारत में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन हेतु एक आदर्श आयोजन सिद्ध हुआ।

इस सम्मेलन का उद्घाटन डॉ ए शुभनंदा राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एयरो) तथा डॉ शिव एस बंदा, मुख्य वैज्ञानिक, ए एफ आर एल, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा किया गया, जिन्होंने इस समारोह में अपना प्रमुख भाषण दिया। डॉ जी इलांगोवन, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (उड्डयानिकी) ने सम्मेलन की कार्यवाही का विमोचन किया। उद्घाटन समारोह के दौरान एस पी से संबंधित एक विशेष पूरक सामग्री का भी विमोचन किया गया। उपस्थित विशिष्ट जनों ने उद्घाटन समारोह के पश्चात प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

इस सम्मेलन में दो पूर्ण सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें ए एफ आर एल, संयुक्त राज्य अमेरिका, लॉकहीड मार्टिन एंड नॉरथ्रॉप ग्रम्मैन कॉरपोरेशन, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर जैसे संगठनों द्वारा सुझाए गए चार विषय शामिल किए गए थे। इसमें प्रत्येक दिन पांच तकनीकी कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिनमें विशिष्ट तकनीकी सत्रों को आयोजित करके वायुगतिकी, संरचना, नोदन, नियंत्रण, पेलोड तथा संचार प्रणाली के क्षेत्र में स्वचालित मानवरहित वायुयानों के अभिकल्प, विकास तथा परीक्षण से संबंधित विषय शामिल किए गए थे। तकनीकी सत्रों के दौरान मानवरहित वायुयान (यू ए वी) प्रमाणन मानकों, वायु यातायात प्रबंधन, प्रचालनात्मक अनुभव तथा अधिगतमत पाठ, स्वतः



स्वचालित मानवरहित वायुयान संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान दीप प्रज्ज्वलन करते हुए डॉ शुभनंदा राव।

उड़ान भरने और उतरने, संचार स्पेक्ट्रम तथा बैंडविड्थ, सेंस और अर्वाइड, अंतर-प्रचालनीयता, सशस्त्र टोह, यू सी ए वी अभिकल्प एवं यू ए वी प्रचालन संकल्पना पर विचार-विमर्श किया गया।



डॉ जी इलांगोवन, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (उड्डयानिकी), (दांये) सम्मेलन की कार्यवाही का विमोचन करते हुए।

इस सम्मेलन में विदेश, भारत सरकार के संगठनों तथा भारतीय निजी संगठनों से आए 400 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें देश के विभिन्न वैमानिकी संस्थानों से आए 20 छात्र शिष्टमंडलों ने भाग लिया। इस सम्मेलन को 15 से भी अधिक प्रायोजकों और पांच से भी अधिक प्रदर्शकों द्वारा पूर्ण समर्थन प्रदान किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम

अनुसंधान केंद्र इमारत, हैदराबाद



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दौरान श्रीमती चंदना खान, आई ए एस, प्रमुख सचिव, को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए डॉ एस के चौधरी।

अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 16 मार्च 2012 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आयोजन समिति, श्रीमती बी रुकमणी, वैज्ञानिक 'ई' ने स्वागत भाषण दिया। डॉ ए स्वर्ण वाई, वैज्ञानिक 'ई' ने महिला दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्रीमती चंदना खान, आई ए एस, प्रमुख सचिव, आंध्र प्रदेश सरकार मुख्य अतिथि थीं। आपने महिलाओं का आह्वान कि वे एकजुट हों तथा उत्कृष्टता, सहनशीलता, तथा समर्पण की प्रतिमूर्ति बनें। डॉ एस के चौधरी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, आर सी आई, ने समारोह की अध्यक्षता की तथा कहा कि इस दिवस का उपयोग सभी क्षेत्रों में महिलाओं के कल्याण के प्रति किया जाना चाहिए। श्रीमती अलीना शशी कुमार, वैज्ञानिक 'डी' ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना, अहमदनगर

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन को एक समारोह का रूप दिया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए, जैसे 04 मार्च 2012 को वी आर डी ई के एन सी ए टी एरिया में आयोजित कौतुक हेतु पैदल मार्च। इस 02 किलोमीटर पैदल मार्च में 60 महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 06 मार्च 2012 को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उत्कृष्ट महिला हस्तियों पर एक

लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में 45 महिलाओं ने अपने ज्ञान का प्रदर्शन किया तथा सक्रिय रूप से भाग लिया। 07 मार्च 2012 को प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ रेणुका पाठक ने सभी आयु वर्ग की महिलाओं को प्रभावित करने वाले उनके स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। श्री विवेक सर्राफ, क्षेत्रीय प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, अहमदनगर ने भारतीय स्टेट बैंक की विभिन्न बचत योजनाओं के संबंध में एक रूपरेखा प्रस्तुत की। इस दौरान आपने बचत के महत्त्व पर विशेष रूप से बल दिया। वी आर डी ई में महिला कल्याण संघ की अध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी रमानारायणन ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। महिला कल्याण संघ की अध्यक्ष की सक्रिय भागीदारी तथा मार्गदर्शन के फलस्वरूप संपूर्ण कार्यक्रम अत्यधिक सफल सिद्ध हुआ।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दौरान पैदल मार्च का दृश्य।

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, कोच्चि

नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एन पी ओ एल), कोच्चि द्वारा 8 मार्च 2012 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ एम लक्ष्मीकुमारी, निदेशक, विवेकानंद केन्द्र वैदिक विज्ञान फाउंडेशन, कोडनगलूर, केरल ने महिला होने की कला तथा विज्ञान विषय पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में आपने महिला के बहुआयामी रूपों, जैसे बेटी, बहन, पत्नी तथा माता के रूप में परिवार में

दिए जाने वाले योगदानों पर प्रकाश डाला। व्याख्यान के दौरान सारगर्भित चर्चा भी हुई। डॉ ए उन्निकृष्णन, सह-निदेशक, एन पी ओ एल ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला।

वायुवाहित प्रणाली केंद्र, बेंगलूरु

सुश्री इंद्रजीत कौर, वैज्ञानिक सी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बेंगलूरु ने 16 मार्च 2011 को

कोठारी सभागार, डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह में अनुसंधान तथा विकास के लिए विश्वव्यापी महिला नेतृत्व एवं सफलता के कठिन गुणक पर आयोजित कार्यशाला के दौरान उच्च पदों पर महिलाओं का अभाव: एक विश्लेषण विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस आलेख को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

पुरस्कार प्राप्ति

बसंती देवी अमीर चंद पुरस्कार

बसंती देवी अमीर चंद पुरस्कार रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी आर डी ई), ग्वालियर के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एम एम परीदा को डी आर डी ओ भवन, नई दिल्ली स्थित डी एस कोठारी सभागार में माननीय स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर माननीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री सुदीप



माननीय स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद, डॉ एम एम परीदा को बसंती देवी अमीर चंद पुरस्कार प्रदान करते हुए।

बंदोपाध्याय तथा स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आई सी एम आर), नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ वी एम कटोच भी उपस्थित थे। इस पुरस्कार में एक प्रमाणपत्र तथा 50,000 रुपए की नकद राशि शामिल थी। डॉ परीदा को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार बार-बार उभर रहे विभिन्न प्रकार के विषाणुओं, विशेषकर डेंगु, जापानी बुखार (जापानी बुखार), चिकनगुनिया, तथा स्वाइन फ्लू (एच आई एन आई एस) के विषाणुओं के संसूचन तथा अभिलक्षणन के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए अनुसंधान कार्य के लिए प्रदान किया गया।

विपुल प्रौद्योगिकी तथा परियोजना संग्राम-II की सफलता में उनके द्वारा किए गए विशिष्ट योगदान को मान्यता प्रदान करते हुए जनरल अफसर कमांडिंग-इन-चीफ, थल सेना प्रशिक्षण कमान (ए आर टी आर ए सी) श्लाघा कार्ड प्रदान किया गया। श्री एस बी तनेजा, वैज्ञानिक 'जी' तथा श्री जे के भार्गव, वैज्ञानिक 'ई' को गणतंत्र दिवस-2012 को श्लाघा कार्ड पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री एम एम पी सिंह, तकनीकी अधिकारी डी, ईसा को इन प्रणालियों के संस्थापन के दौरान उनके द्वारा की गई समर्पित सेवाओं के लिए जनरल अफसर कमांडिंग-इन-चीफ, थल सेना प्रशिक्षण कमान (ए आर टी आर ए सी) श्लाघा कार्ड प्रदान किया गया।

जनरल अफसर कमांडिंग-इन-चीफ, थल सेना प्रशिक्षण कमान (ए आर टी आर ए सी)

श्लाघा कार्ड

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली के वैज्ञानिकों की दृढ़ प्रतिज्ञा, आयोजना तथा



श्री एस बी तनेजा श्री जे के भार्गव श्री एम एम पी सिंह

नियुक्ति

निदेशक, जीवन विज्ञान निदेशालय (डी एल एस)



डॉ लोकेन्द्र सिंह, वैज्ञानिक 'जी' को 01 मार्च 2012 से डी आर डी ओ मुख्यालय के जीवन विज्ञान निदेशालय (डी एल एस) का निदेशक नियुक्त किया गया है। डॉ सिंह का जन्म 05 मई 1957 को हुआ था। आपने वर्ष 1981 में विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि

तथा वर्ष 1984 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना से माइक्रोबायोलॉजी में पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। आप अगस्त 1984 में रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एफ आर एल) में वैज्ञानिक 'बी' के रूप में कार्यभार संभालकर डी आर डी ओ से जुड़े तथा डी एफ आर एल में वर्ष 1984 से लेकर वर्ष 1988 तक अपनी सेवा प्रदान की।

इसके पश्चात आपने वर्ष 1988-1989 के दौरान रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर में वैज्ञानिक 'सी' के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात आपने डी आर डी ई, ग्वालियर में कार्य किया (1989-2009)। डी आर डी ओ मुख्यालय में जीवनविज्ञान निदेशालय के निदेशक के रूप में कार्यभार संभालने से पहले डॉ लोकेन्द्र सिंह रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला, तेजपुर में निदेशक के पद पर तैनात थे।

डॉ लोकेन्द्र सिंह को निम्न ताप जैव-निम्नीकरण, बी डब्ल्यू महत्व के जीवाण्विक टॉक्सिनों तथा जैव संवेदक (बायो सेंसर) के क्षेत्र में अनुसंधान का व्यापक अनुभव है। आपने विभिन्न प्रकार जैव-संपाचित्रों को विकसित किया है, जो निम्न ताप तथा अधिक ऊंचाई के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। जैव-संपाचित्र प्रौद्योगिकी 25 से भी अधिक प्रतिष्ठानों को अंतरित की गई है। आपको

रोगजनक जीवाणुओं (सालमोनेला टाइफी तथा विब्रियो कोलेरी) के पर्यावरणीय संसूचन हेतु प्रतिरक्षी-जैव संवेदक (इम्युनो बायो सेंसर) को विकसित करना तथा बोटुलिनम और शिगा टॉक्सिनो जैसे जीवाण्विक टॉक्सिनों के लिए संसूचन प्रणालियों को विकसित करने का भी श्रेय प्राप्त है।

आपको मानव अपशिष्ट के ऑनबोर्ड उपचार हेतु जैव-संपाचित्रों (जैव शौचालयों) को विकसित करने के लिए रक्षा प्रौद्योगिकी स्पिन-ऑफ पुरस्कार-2007; जैव-संवेदकों के विकास हेतु उल्लेखनीय योगदान के लिए डी आर डी ओ प्रौद्योगिकी समूह पुरस्कार (2006); कार्बनिक अपशिष्टों के जैव उपचार हेतु नवीनतम प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार (2002); अधिक ऊंचाई, निम्न ताप वाले क्षेत्रों में मानव अपशिष्ट के निबटान हेतु निम्न ताप सक्रिय इनोकुलम तथा जैव-संपाचित्रों को विकसित करने हेतु उल्लेखनीय योगदान के लिए डी आर डी ओ प्रौद्योगिकी समूह पुरस्कार-2002; जैव विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्रिगेडियर (डॉ) के एम राव पुरस्कार-1998 (डी आर डी ई, ग्वालियर); सर्वोत्तम शोध-पत्र के लिए ब्रिगेडियर डॉ के एम राव पुरस्कार-2002 (डी आर डी ई, ग्वालियर) इत्यादि पुरस्कार प्राप्त हैं।

आपने 1994-1995 के दौरान 14वें वैज्ञानिक अंतर्राष्ट्रीय अभियान में भाग लिया तथा जीवाणुओं की कुछ नई प्रजातियों का अभिलक्षण निर्धारण किया है। आपने बी टी डब्ल्यू सम्मेलन के संबंध में चर्चा करने के लिए जेनेवा में आयोजित संयुक्त राष्ट्र संघ की अंतर्राष्ट्रीय बैठक में भी भाग लिया। आपके मार्गदर्शन में 10 छात्रों ने पी एच डी शोध कार्य पूरा किया है। आपके नाम से 20 पेटेंट दर्ज हैं। आप एसोसिएशन ऑफ माइक्रोबायोलॉजिस्ट्स ऑफ इंडिया (ए एम आई) के आजीवन सदस्य हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में आपके 130 शोध पत्र/लेख प्रकाशित हुए हैं।

आभार

डी आर डी ओ समाचार का सम्पादक मंडल नियमित रूप से प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं से संबंधित समाचार भेजने के लिए सभी संवाददाताओं, राजभाषा अधिकारियों, तथा प्रबुद्ध निदेशकगणों का आभार व्यक्त करता है।

मानव संसाधन विकास गतिविधियां

सम्मेलन / सेमिनार / विचार-गोष्ठी / प्रशिक्षण पाठ्यक्रम / बैठक

रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास
स्थापना, कानपुर



श्री एस के पाण्डेय, डॉ डी के सेतुआ, तथा डॉ सरफराज आलम पाठ्यक्रम सामग्री का विमोचन करते हुए (बांये से)।

रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर ने डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों और तकनीकी संवर्ग के अधिकारियों के लिए 06-10 फरवरी 2012 के दौरान अंतःक्षेपी संचन प्रौद्योगिकी: नवीनतम रुझान तथा प्रौद्योगिकियां विषय पर पांच-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पाठ्यक्रम में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ बी के सेतुआ, अपर निदेशक, डी एम एस आर डी ई ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया।

डॉ सरफराज आलम, समूह निदेशक ने विभिन्न प्रकार के तापसुघट्य पदार्थों से वांछित उत्पाद प्राप्त करने के लिए अंतःक्षेपी संचन तकनीक के विभिन्न पहलुओं पर बल दिया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ सेतुआ ने रक्षा क्षेत्र में अंतःक्षेपी संचन प्रौद्योगिकी के महत्त्व पर विशेष रूप से चर्चा की। डॉ ए के सक्सेना, निदेशक, डी एम एस आर डी ई ने समापन समारोह के दौरान प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला, देहरादून

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स प्रयोज्यता प्रयोगशाला (डील), देहरादून द्वारा 15-16 फरवरी 2012 के दौरान सैन्य

अनुप्रयोगों हेतु भविष्यत् संचार प्रौद्योगिकियां तथा अवधारणाएं विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला के दौरान प्रतिष्ठित अकादमिकों तथा डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों द्वारा सामरिक संचार प्रणालियां, नेटवर्क केन्द्रित रेडियो, नीला हरा लेजर, स्पैक्ट्रम संवेदन, मस्तिष्कीय नेटवर्क, एम आई एम ओ, ओ एफ डी एम, डब्ल्यू आई एफ आई, डब्ल्यू आई एम ए एक्स, इत्यादि विषयों पर नवीनतम प्रौद्योगिकियों के बारे में अवगत कराया गया।

डॉ के डी नायक, विशिष्ट वैज्ञानिक, मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एम ई डी एवं एम आई एस टी) द्वारा

कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। कार्यशाला में चार तकनीकी सत्र थे, नामत् नेटवर्क केन्द्रित रेडियो प्रौद्योगिकियां, सामरिक संचार प्रणालियां, निगरानी तथा चित्र जासूसी प्रौद्योगिकियां, तथा अवयव एवं उपकरण प्रौद्योगिकियां। इन सत्रों के पश्चात् पैनल चर्चा का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में प्रतिष्ठित संस्थानों, जैसे, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, भारतीय विज्ञान संस्थान, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता; आई आई आई टी, हैदराबाद; समीर, इसरो, बी ई एल, तथा ई सी आई एल के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला से इस विषय पर श्रेष्ठ जानकारी का आदान-प्रदान हुआ जिससे डील, देहरादून को सैन्य संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी शोध कार्य करने में मदद मिलेगी।

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान, लेह

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2012 के अवसर पर 28 फरवरी 2012 को लद्दाख में कृषि उत्पादन तथा पशुपालन प्रणालियां विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सोनम दोरजे, माननीय कार्यकारी कृषि पार्षद, लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय

विकास परिषद (एल ए एच डी सी) मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर कर्नल पी बी देशमुख, कार्यकारी निदेशक, डिहार; मुख्य कृषि अधिकारी, मुख्य बागवानी अधिकारी, मुख्य पशुपालन अधिकारी, कृषि विकास अधिकारी, बागवानी विकास अधिकारी, सभी वैज्ञानिक तथा कर्मचारी उपस्थित थे। कर्नल पी बी देशमुख ने उपस्थित गणमान्य विभूतियों को संस्थान की गतिविधियों के बारे में बताया। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि श्री सोनम दोरजे जी ने एल ए एच डी सी के कार्यकलापों की जानकारी दी। आपने डिहार तथा एल ए एच डी सी के मध्य सहभागिता पर बल दिया ताकि लद्दाख में खेती तथा पशुपालन में बढ़ोत्तरी हो सके। मुख्य कृषि अधिकारी, मुख्य बागवानी अधिकारी, तथा मुख्य पशुपालन अधिकारी ने राज्य के विभागों के द्वारा किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ अशोक कुमार, वैज्ञानिक बी, ने इस अवसर पर **रेशनलाइजेशन ऑफ पोटेशियम रिक्वायरमेंट फॉर मैक्सिमम इकोनोमिक यील्ड ऑफ ओनियन इन नूब्रा वेली ऑफ लद्दाख** विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। इसके पश्चात् डिहार के वैज्ञानिकों तथा गणमान्य अतिथियों के बीच सहयोग की संभावनाओं पर तकनीकी चर्चा हुई।

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान, दिल्ली

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली में दिनांक 17 फरवरी 2012 को **आचरण**



आचरण नियमावली विषय पर हिन्दी कार्यशाला के दौरान व्याख्यान देते हुए श्री राजेश गोयल, वैज्ञानिक जी।



राजभाषा संगोष्ठी के दौरान संबोधित करते मुख्य अतिथि श्री सोनम दोरजे।

नियमावली विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान से श्री राजेश गोयल, वैज्ञानिक 'जी' को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया। वक्ता ने केन्द्रीय सिविल सेवाएं (आचरण) नियमावली विषय पर हिन्दी में व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर वरिष्ठ वैज्ञानिक, अन्य अधिकारीगण एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

वक्ता ने सौहार्दपूर्ण एवं रुचिपूर्ण वातावरण बनाते हुए उपस्थित प्रतिभागियों को सहज तरीके से इस नियमावली के अंतर्गत क्या करें और क्या न करें के बारे में बताया। आपने सरकारी कर्मचारी को हर समय सत्यनिष्ठ रहने व अपनी ड्यूटी के प्रति समर्पित रहने की महत्ता के बारे में जानकारी दी। इसके अतिरिक्त अस्पृश्यता का व्यवहार न करने, प्रतिबंधित संस्था से संबंध न रखने, विदेशों में जाने पर भारतीय या विदेशी मामलों पर अपनी राय व्यक्त न करने तथा विदेशी प्रतिष्ठान से कोई भी उपहार स्वीकार न करने को कहा। आपने यह भी जानकारी दी कि कौन सी क्रिया या आचरण कदाचार की श्रेणी में आता है या कौन से कार्यों के लिए सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति/स्वीकृति की आवश्यकता होती है।

उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने बड़े ध्यान से वक्ता का व्याख्यान सुना तथा उत्सुकता से अपने प्रश्न पूछे जिनका वक्ता ने सटीक उत्तर दिया। इसके उपरांत श्री राजीव गुप्ता, वैज्ञानिक 'जी' एवं श्री आर एम सिंह, वैज्ञानिक 'जी' ने भी उक्त नियमावली के बारे में उदाहरण देते हुए अतिरिक्त जानकारी प्रदान की जिसमें कार्यालय उपस्थिति और संपत्ति के क्रय-विक्रय से संबंधित नियमों के बारे में जानकारी दी गई।

इस कार्यशाला में लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा उक्त विषय की बारीकियों का ज्ञानार्जन किया।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह, दिल्ली



पाठ्यक्रम प्रतिभागियों के साथ डॉ पी के सक्सेना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एस ए जी।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली द्वारा 13-24 फरवरी 2012 के दौरान **कूट विज्ञान तथा सूचना सुरक्षा** विषय पर आधारभूत पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम में डी आर डी ओ एवं अन्य संस्थानों से 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को विषय से संबंधित अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराना था। लगभग सभी तकनीकी व्याख्यान आंतरिक सदस्यों द्वारा दिए गए तथा एक व्याख्यान प्रोफेसर एस वी नागराज, आर एम के अभियांत्रिकी महाविद्यालय, तमिलनाडु द्वारा दिया गया। सभी प्रतिभागियों द्वारा पाठ्यक्रम की सराहना की गई। श्री राम रतन, वैज्ञानिक एफ, पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र, बेंगलूरु



अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी उत्कर्ष-2012 के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्वलन समारोह का एक दृश्य।

बेंगलूरु स्थित डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं ने इस वर्ष संयुक्त रूप से अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी **उत्कर्ष-2012** का आयोजन 23 फरवरी 2012 को सैन्य उड़नयोग्यता तथा प्रमाणीकरण केंद्र (सेमीलेक), बेंगलूरु में किया। ए डी ई, कैब्स, केयर, सेमिलेक, डेयर, डेबेल, एल आर डी ई, जी टी आर ई और एम टी आर डी सी के तत्वावधान में इस संगोष्ठी का आयोजन हुआ था। ए डी ए के उत्कृष्ट वैज्ञानिक श्री अजय वोरा उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे।

इस संगोष्ठी में वैज्ञानिकों ने डी आर डी ओ से संबंधित विषयों पर 39 शोधपत्र प्रस्तुत किए। सेमिलेक के साथ-साथ बेंगलूरु के सभी डी आर डी ओ प्रयोगशालाएं इस संगोष्ठी आयोजन समिति में शामिल थीं। सेमिलेक के मुख्य कार्यपालक महोदय डॉ के तमिलमणि, उत्कर्ष आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री पी आर बघेल, वैज्ञानिक 'जी', तथा आयोजन समिति के संयोजक श्री संजीव कुमार झा, वैज्ञानिक 'ई' ने उद्घाटन समारोह में राजभाषा हिंदी की महत्ता तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसकी उपयुक्तता के बारे में श्रोताओं को अवगत कराया। संगोष्ठी में बेंगलूरु के विविध डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं से 76 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र, दिल्ली

मेटकॉफ हाउस परिसर स्थित सभी प्रयोगशालाओं के साथ मिलकर एकदिवसीय संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 20 जनवरी 2012 को लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली द्वारा किया गया। संगोष्ठी का विषय था **राष्ट्रीय सुरक्षा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान**। संगोष्ठी के दौरान कुल 32 शोध-पत्र एवं लेख प्रस्तुत किए गए। इन सभी लेखों को कुल पांच सत्रों में बांटा गया।

संगोष्ठी का आरंभ सभी प्रयोगशालाओं के निदेशकों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। संगोष्ठी के दौरान श्रीमती मधु शर्मा, निदेशक, राजभाषा प्रभाग, रक्षा मंत्रालय को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जिनके द्वारा उद्घाटन भाषण दिया गया। तत्पश्चात् डॉ ए के मैनी, निदेशक, लेसटेक ने अपने संबोधन में इस तरह की संगोष्ठियों के आयोजन के महत्त्व को रेखांकित करते हुए सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन किया।

संगोष्ठी के दौरान सभी प्रयोगशालाओं के लगभग 250 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी के लिए 46 लेखकों ने लेख लिखने में योगदान दिया। वरिष्ठ वैज्ञानिकों की अध्यक्षता में करवाए गए 5 सत्रों के दौरान लगभग 30 के करीब प्रस्तुतियां दी गईं। सत्र के दौरान सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्रों तथा स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया।

अंत में, संगोष्ठी के समापन सत्र में डॉ पी के सक्सेना, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली ने संगोष्ठी की समीक्षा करते हुए भविष्य में भी इस तरह के सफल आयोजनों की कामना की। उन्होंने अपने करकमलों से संगोष्ठी के सफल आयोजन में अपना योगदान देने वाले सभी कर्मियों को प्रमाण-पत्रों एवं स्मृति चिह्नों से सम्मानित किया।

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना, बेंगलूरु

रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान स्थापना (डेयर), बेंगलूरु द्वारा 11 फरवरी 2012 को उन्नत वैमानिकी-भारतीय परिदृश्य विषय पर एकदिवसीय रजत जयंती सेमिनार का आयोजन किया गया। डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक निकायों, तथा सशस्त्र बलों से वैमानिकी के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने इस सेमिनार में भाग लिया। सेमिनार में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को श्री के संधानम, भूतपूर्व मुख्य सलाहकार, डी आर डी ओ तथा निदेशक, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बेंगलूरु; कमांडेंट ए एस टी ई, एस डी ई, तथा वैमानिकी के विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श का लाभ मिला।



संकाय सदस्यों के साथ प्रतिभागीगण।

खेलकूद समाचार

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला, विशाखापत्तनम

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम द्वारा 04 जनवरी से 06 जनवरी 2012 के दौरान डी आर डी ओ मध्य क्षेत्र बॉलीबॉल प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। श्री एस वी रंगराजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, एन एस टी एल ने प्रतिस्पर्धा का उद्घाटन किया। इस प्रतिस्पर्धा में डी आर डी ओ की मध्य क्षेत्र की सात टीमों ने भाग लिया, नामतः रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एम आर एल), हैदराबाद; रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद; रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल), हैदराबाद; उन्नत प्रणाली

प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद; अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद; एकीकृत परीक्षण परिसर (आई टी आर), बालासोर; तथा नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम। प्रतिस्पर्धा के दौरान कुल 12 मैच हुए जिनमें नौ लीग मैच, दो सेमीफाइनल तथा भव्य फाइनल शामिल हैं। फाइनल मैच एन एस टी एल तथा डी एम आर एल के बीच हुआ, जिसमें एन एस टी एल ने बाजी मारी।

समापन समारोह में निदेशक, एन एस टी एल मुख्य अतिथि थे। श्रीमती ज्योति रंगराजन, एन एस टी एल की प्रथम महिला ने विजेताओं तथा उपविजेताओं को ट्रॉफियां प्रदान कीं। डी आर डी ओ राष्ट्रीय बॉलीबॉल प्रतिस्पर्धा के लिए 15 खिलाड़ियों का चयन किया गया।

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना, अहमदनगर

वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर द्वारा डी आर डी ओ पश्चिमी क्षेत्र क्रिकेट प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्घाटन डॉ सी पी रामनारायण, निदेशक, वी आर डी ई द्वारा 27 फरवरी 2012 को किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में डी आर डी ओ की पश्चिमी क्षेत्र की पांच टीमों ने भाग लिया, नामत् उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे; अनुसंधान तथा

विकास स्थापना (इंजीनियर्स) (आर एंड डी ई (इंजी)), पुणे; आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे; एच ई एम आर एल केन्द्र, नासिक; तथा वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापना (वी आर डी ई), अहमदनगर। सभी मैचों में कांटे की टक्कर रही। फाइनल मैच वी आर डी ई तथा एच ई एम आर एल के बीच खेला गया। इसमें वी आर डी ई की टीम ने एच ई एम आर एल को 02 विकेट से हरा दिया। कर्नल जी एस राडकर को प्रतिस्पर्धा का श्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया।



वी आर डी ई की विजेता टीम ट्रॉफी के साथ।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली

27 फरवरी 2012: मेजर जनरल एस सी जैन, विशिष्ट सेवा मेडल, कमांडर मुख्यालय तकनीकी समूह ई एम ई (सेना)।



मेजर जनरल एस सी जैन (बांये से दूसरे) को ईसा की गतिविधियों की जानकारी देते हुए श्री एच वी श्रीनिवास राव, निदेशक, ईसा (बांये)।

वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बेंगलूरु

07 फरवरी 2012: श्री सेलसो एमोरिम, माननीय रक्षा मंत्री, ब्राजील।



श्री एमोरिम (बांये से दूसरे) को कैब्स की गतिविधियों की जानकारी देते हुए निदेशक, कैब्स (बांये)।

डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारे अतिथिगण

इलैक्ट्रॉनिक्स तथा रडार विकास स्थापना (एल आर डी ई), बेंगलूरु



लेफ्टिनेंट जनरल नरेन्द्र सिंह शस्त्रखोजी रडार का निरीक्षण करते हुए।

17 जनवरी 2012: लेफ्टिनेंट जनरल नरेन्द्र सिंह, सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, डी सी ओ ए एस (पी एवं एस)।

रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डी एम एस आर डी ई), कानपुर



डॉ जे नारायण दास, डी एम एस आर डी ई की प्रयोगशाला का निरीक्षण करते हुए।

01 मार्च 2012: डॉ जे नारायण दास, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एन एस एवं एम)। आपने नवसिपित ओ एम वी पी ई प्रणाली तथा प्रयोगशाला की नैनो स्पाइडर मशीन का निरीक्षण किया। आपने स्थापना द्वारा विकसित बुलेटप्रूफ जैकेट की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थीगण एन एस टी एल का भ्रमण करते हुए।

28 फरवरी 2012: राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थीगण।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली



लेफ्टिनेंट जनरल एस पी कोचर, एस ए जी की गतिविधियों में गहरी रुचि लेते हुए।

05 मार्च 2012: लेफ्टिनेंट जनरल एस पी कोचर, अति विशिष्ट सेवा मेडल, सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, ए डी पी, एस ओ इन सी एवं सीनियर कर्नल कमांडेंट (सिगनल कोर); मेजर जनरल अतुल मेहरा, ए डी जी टी, तथा कर्नल मुरलीधरन के, निदेशक, क्रिप्टोलॉजी एवं जी एस 01. आप सभी को दक्ष उच्च कार्यनिष्पादन संगणक सुविधा की कार्यप्रणाली से अवगत कराया गया।

मुख्य सम्पादक
डॉ अ ल मूर्ति

सह-मुख्य सम्पादक
अशोक कुमार

सम्पादक
फूलदीप कुमार

सम्पादकीय सहायक
अशोक कुमार

मुद्रण
एस के गुप्ता
हंस कुमार

विपणन
आर पी सिंह

डॉ अ ल मूर्ति, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फैक्स : 011-23902500 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in